Tripursundari Tantra Sadhana
श्री त्रिपुर-सुन्दरी तंत्र-साधना

साधकों के हितार्थ जिस स्तोत्र का उल्लेख मैं यंहा करने जा रहा हूँ, वह भगवती श्रीराज राजेश्वरी का स्तोत्र है, जिसे " **श्रीललिता-लकारादि-शतनाम-स्तोत्र**" के नाम से जाना जाता है। इस स्तोत्र को विधि-विधान से पाठ आदि करने पर षट्कर्मों का साधन होता है। लेकिन यह अति आवश्यक है कि साधक उत्तम गुरू के द्वारा दीक्षित होना चाहिए।

भगवती त्रिपुर सुन्दरी समस्त तंत्रों की आधारभूत शक्ति हैं। तंत्रों में उत्कृष्ट साधना भैरवी चक्र अथवा श्रीचक्र में इन्हीं महाशक्ति का यजन-पूजन होता है।

- प्रस्तुत तंत्रात्मक स्तोत्र का विधान निम्नवत् हैः-
- निर्जन स्थान, श्मशान, निर्जन भवन, शिवालय, तालाब, नदी के किनारे, या एक-लिंग (एक-लिंग उस स्थान को कहा जाता है, जिस शिवलिंग के चारों ओर पांच कोस तक दूसरा शिवलिंग न हो।) में पाठ करने से समस्त सिद्धियों की प्राप्ति होती है।
- किसी वेश्या अथवा मासिक धर्म के समय स्त्री के पास बैठकर इस स्तोत्र के एक सौ आठ बार पाठ करने से यह सिद्ध हो जाता है और स्मरण करने मात्र से सिद्धियां प्रत्यक्ष हो जाती हैं।
- एक निश्चित अवधि में इस स्तोत्र की दस हजार आवृतियां करने पर एक पुरश्चरण पूर्ण होता है।

पुरश्चरण पूर्ण होने पर यह सिद्ध होकर साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करने में समर्थ होता है।

- पुरश्चरण के उपरान्त यदि किसी का वशीकरण करना हो तो इस स्तोत्र का एक हजार बार पाठ करें।
- यदि किसी भी लोक की कन्या का वशीकरण करना हो तो नित्यप्रति इस स्तोत्र का पाठ करते हुए धतूरे के फूलों से हवन करें। ऐसा करने से छः माह में समस्त लोकों की कन्याओं का वशीकरण होता है।
- रोग नाश के लिए पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर इस स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें।
- किसी निर्जन घर में बैठकर इस स्तोत्र का एक हजार बार पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और समस्त लोग साधक के वशीभूत होते हैं।
- यदि कोई शत्रु आपके विरूद्ध कोई अनर्गल वार्तालाप करके आपकी मान-मर्यादा, पद-प्रतिष्ठा, गरिमा को हानि पंहुचा रहा हो तो मंगलवार के दिन प्रेत-वस्त्र लाकर उस पर उस शत्रु का नाम लिखकर उसमें शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा करें और रात्रिकाल में उस वस्त्र को श्मशान भूमि में दबाकर उक्त स्तोत्र का वंही बैठकर दो हजार पाठ करें तो उस शत्रु की जीभ बंध जाती है और वह गूंगा अथवा गूंगे के समान हो जाता है।
- श्मशान भूमि में इस स्तोत्र का पांच हजार बार पाठ करने से समस्त शत्रुओं का नाश हो जाता है।
- यदि शत्रु को मृत्यु का ग्रास बनाना हो तो शनिवार के दिन प्रेत-वस्त्र लाकर, प्रत्येक नाम से सम्पुंटित करके शत्रु का नाम लिखें। तदोपरान्त उसकी प्राण-प्रतिष्ठा

करके मां श्री राज-राजेश्वरी की पूजा काले धतूरे के फूलों से करें। रात्रि में उस वस्त्र को श्मशान भूमि में दबाकर इस स्तोत्र का १०८ बार पाठ करें।

- मंगलवार के दिन प्रेत भूमि में जाकर वंहा से चिता के अंगारे ले आएं और प्रेत-वस्त्र में लपेट कर प्रेत-रस्सी से बांध दें। उसके बाद उसे इस स्तोत्र से दस बार अभिमंत्रित करके दुश्मन के घर में दबा दे। केवल सात दिनों के भीतर ही उस स्थान अथवा पद से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

- कुमारी पूजा करके श्रद्धा पूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करने वाले साधक के असाध्य कार्य सिद्ध होते हैं।

- युद्ध भूमि, शत्रुओं के मध्य, राज-भय और अकाल के समय इस स्तोत्र का पाठ करने से संकट दूर होता है।

- शोधिता उत्तम स्त्री को अपने बांयी ओर बिठाकर जप सहित इस स्तोत्र का पाठ करने से बहुत जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है।

- चतुर्दशी के दिन कामिनी के साथ जो दरिद्र व्यक्ति ८ बार स्तोत्र का पाठ करता है, वह कुबेर के समान धनी हो जाता है। (कामिनी अथवा शोधिता स्त्री को भैरवी भी कहा जाता है।)

- नित्य-प्रति मां त्रिपुर सुन्दरी की पूजा करके प्रत्येक नाम से हवन करने से साधक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

- इस स्तोत्र से मक्खन को अभिमंत्रित करके बन्ध्या स्त्री को खिलाने से वह पुत्रवती होती है।

- पुत्र की कामना करने वाली स्त्री को इस स्तोत्र का यंत्र बनाकर गले, बांयी भुजा अथवा योनि में रखना चाहिए।

क्रम-दीक्षा से युक्त साधक को ही सिद्धि मिलती है। वह कल्पोक्त सिद्धियों को प्राप्त कर क्रमशः राज्य-वैभव को प्राप्त करता है। वह ब्रह्मा के लेख यानि कि प्रारब्ध को भी मिटाकर संसार-बंधन से छूटकर सभी सिद्धियों को प्राप्त करता है।

सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें:-

विनियोगः- ॐ अस्य श्री ललिता लकारादि शतनाम स्तोत्र मन्त्रस्य राज-राजेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप छंदः श्री ललिताम्बा देवता, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्तयर्थे च षट्कर्म सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- श्री राज-राजेश्वर ऋषये नमः शिरसि।

अनुष्टप छन्दसे नमः मुखे। श्री ललिताम्बा देवतायै नमः हृदि। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष साधने च षट्कर्म सिद्धयर्थे पाठे विनियोगः।
इसके उपरान्त "ऐं क्लीं सौः" बीजों से कर-षडंग-न्यास करें और प्रयोगों में इसी की योजना करें।

श्री ललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र

।।पूर्व पीठिका।।

कैलास-शिखरासीनं, देव-देवं जगद्-गुरूम्।
पप्रच्छेशं परानन्दं, भैरवी परमेश्वरम् ।।

।। श्री भैरवी-उवाच।।

कौलेश! श्रोतुमिच्छामि, सर्व-मन्त्रोत्तमोत्तमम्।
ललिताया शतनाम, सर्व काम-फल-प्रदम्।।

।।श्री भैरव-उवाच।।

श्रृणु देवि महाभागे! स्तोत्रमेतदनुत्तमम्।
पठनाद् धारणादस्य, सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत्।।
षट्-कर्माणि सिद्धयन्ति, स्तवस्यास्य प्रसादतः।
गोपनीयं पशोरग्रे, स्व-योनिमपरे यथा।।

।।विनियोग।।

ललिताया लकारादि, नाम-शतकस्य देवि! ।
राज-राजेश्वरो र्षिः, प्रोक्तो छन्दोऽनुष्टुप् तथा।।
देवता ललिता-देवी, षट्-कर्म-सिद्धयर्थे तथा।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तितः।।
वाक्-काम-शक्ति (ऐं क्लीं सौः), कर-षडंगमाचरेत्।
प्रयोगे बाला-ऽयक्षरी, योजयित्वा जपं चरेत्।।

****

।।मूल श्री ललिता लकारादि-शतनाम स्तोत्रम्।।

ललिता लक्ष्मी लोलाक्षी लक्ष्मणा लक्ष्मणार्चिता।
लक्ष्मण-प्राण-रक्षिणी, लाकिनी लक्ष्मण-प्रिया ।।१।।
लोला लकारा लोमेशा, लोल-जिह्व लज्जावती।
लक्ष्या लाक्ष्या लक्ष-रता, लकाराक्षर-भूषिता ।।२।।
लोल-लयात्मिका लीला, लीलावती च लांगली।
लावण्यामृत-सारा च, लावण्यामृत-दीर्घिका ।।३।।
लज्जा लज्जा-मती लज्जा, ललना ललन-प्रिया ।
लवणा लवली लसा, लाक्षकी लुब्धा लालसा ।।४।।
लोक-माता लोक-पूज्या, लोक-जननी लोलुपा ।
लोहिता लोहिताक्षीच, लिंगाख्या चैव लिंगेशी।।५।।
लिंग-गीति लिंग-भवा, लिंग-माला लिंग-प्रिया।
लिंगाभिधायिनी लिंगा, लिंग-नाम-सदानन्दा ।।६।।
लिंगामृत-प्रीता लिंगार्चन-प्रीता लिंग-पूज्या।
लिंग-रूपा लिंगस्था च, लिंगालिंगन-तत्परा ।।७।।
लता-पूजन-रता च, लता - साधक -तुष्टिदा।
लता-पूजक-रक्षिणी, लता -साधन- सिद्धिदा।।८।।
लता - गृह - निवासिनी, लता-पूज्या लताराध्या ।
लता-पुष्पा लता-रता, लता-धारा लता-मयी।९।।
लता-स्पर्शन-सन्तुष्टा, लता-आलिंगन हर्षिता।
लता-विद्या लता-सारा, लता-आचारा लता-निधि।।१०।।
लवंग-पुष्प-सन्तुष्टा, लवंग-लता-मध्यस्था।

लवंग-लतिका-रूपा, लवंग-होम-सन्तुष्टा।।११।।
लकाराक्षर-पूजिता, च लकार-वर्णोद्भवा।
लकार-वर्ण-भूषिता, लकार-वर्ण-रूचिरा ।।१२।।
लकार-बीजोद्भवा तथा लकाराक्षर-स्थिता।
लकार-बीज-निलया, लकार-बीज-सर्वस्वा।।१३।।
लकार-वर्ण-सर्वांगी, लक्ष्य-छेदन-तत्परा।
लक्ष्य-धरा लक्ष्य-घूर्णा, लक्ष-जापेन-सिद्धिदा।।१४।।
लक्ष-कोटि-रूप-धरा, लक्ष-लीला-कला-लक्ष्या।
लोक-पालेनार्चिता च, लाक्षा-राम-विलेपना ।।१५।।
लोकातीता लोपा-मुद्रा, लज्जा-बीज-स्वरूपिणी।
लज्जा-हीना लज्जा-मयी, लोक-यात्रा-विधायिनी।।१६।।
लास्या-प्रिया लय-करी, लोक-लया लम्बोदरी।
लघिमादि-सिद्धि-दात्री, लावण्य-निधि-दायिनी।
लकार-वर्ण-ग्रथिता, लं-बीजा ललिताम्बिका।।१७।।

.....फल-श्रुति.....

इति ते कथितं देति!, गुह्याद् गुह्य-तरं परम्।
प्रातः - काले च मध्यान्हे, सायान्हे च सदा निशि।
यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो, त्रैलोक्य-विजयी भवेत्।।१।।
सर्व - पापि - विनिर्मुक्तः, स याति ललिता-पदम्।
शून्यागारे शिवारण्ये, शिव-देवालये तथा।।२।।
शून्य-देशे तडागे च, नदी-तीरे चतुष्पथे।
एक-लिंगे ऋतु-स्नाता-गेहे वैश्या-गृहे तथा।।३।।
पठेदष्टोत्तर-शत-नामानि सर्व-सिद्धये।
साधको वांच्छां यत्-कुर्यात्, तत्तथैव भविष्यति।।४।।
ब्रह्माण्ड-गोलके याश्च, याः काश्चिज्जगती-तले।
समस्ताः सिद्धयों देवि!, करामलक-वत् सदा।।५।।

साधक - स्मृति - मात्रेण, यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः।
स्वयमायान्ति पुरतो, जपादीनां तु का कथा।।६।।
अयुतावर्त्तनाद् देवि!, पुरश्चर्याऽस्य गीयते।
पुरश्चर्या-युतः स्तोत्रः, सर्व-कर्म-फल-प्रदः।।७।।
सहस्त्रं च पठेद्यस्तु, मासार्धं साधकोत्तमः।
दासी-भूतं जगत्-सर्वं, मासार्धाद् भवति ध्रुवम्।।८।।
नित्यं प्रति-नाम्ना हुत्वा, पलाश-कुसुमैर्नरः।
भू-लोकस्थाः सर्व-कन्याः, सर्व-लोक-स्थितास्तथा।।९।।
पातालस्थाः सर्व-कन्याः, नाग-कन्याः यक्ष-कन्याः।
वशीकुर्यान्मण्डलार्धात्, संशयो नात्र विद्यते।।१०।।
अश्वत्थ-मूले पठेत् शत-वारं ध्यान-पूर्वकम्।
तत्-क्षणाद् व्याधि-नाशश्च, भवेद् देवि! न संशयः।।११।।
शून्यागारे पठेत् स्तोत्रं, सहस्रं ध्यान-पूर्वकम्।
लक्ष्मी प्रसीदति ध्रुवं, स त्रैलोक्यं वशिष्यति।।१२।।
प्रेत-वस्त्रं भौमे ग्राह्यं, रिपु-नाम च वेष्टितम्।
प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा तु, पूजां चैव हि कारयेत्।।१३।।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, द्वि-सहस्रं पठेत् ततः।
जिह्वा-स्तम्भनमाप्नोति, सद्यो मूकत्वमाप्नुयात्।।१४।।
श्मशाने पठेत् स्तोत्रं, अयुतार्धं सु-बुद्धिमान्।
शत्रु-क्षयो भवेत् सद्यो, नान्यथा मम भाषितम्।।१५।।
प्रेत-वस्त्रं शनौ ग्राह्यं, प्रति-नाम्ना सम्पुटितम्।
शत्रु-नाम लिखित्वा च , प्राण-प्रतिष्ठां कारयेत्।।१६।।
ततः ललितां सम्पूज्य, कृष्ण-धत्तूर-पुष्पकैः।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, शतवारं पठेत् स्तोत्रम्।।१७।।
ततो मृत्युमवाप्नोति, देव-राज-समोऽपि सः।
श्मशानांगारमादाय, मंगले शनिवारे वा।।१८।।
प्रेत-वस्त्रेण संवेष्टय, बध्नीयात् प्रेत-रज्जुना।

दशाभिमन्त्रितं कृत्वा, खनेद् वैरि-वेश्मनि।।१६।।
सप्त-रात्रान्तरे तस्योच्चाटनं भ्रामणं भवेत्।
कुमारीं पूजयित्वा तु, यः पठेद् भक्ति-तत्परः।।२०।।
न किंचिद् दुर्लभं तस्य, दिवि वा भुवि मोदते।
दुर्भिक्षे राज-पीडायां, संग्रामे वैरि-मध्यके।।२१।।
यत्र यत्र भयं प्राप्तः, सर्वत्र प्रपठेन्नरः।
तत्र तत्राभयं तस्य, भवत्येव न संशयः।।२२।।
वाम-पार्श्वे समानीय, शोधितां वर-कामिनीम्।
जपं कृत्वा पठेद् यस्तु, तस्य सिद्धिः करे स्थिता।।२३।।
दरिद्रस्तु चतुर्दश्यां, कामिनी-संगमैः सह।
अष्ट-वारं पठेद् यस्तु, कुबेर सदृशो भवेत्।।२४।।
श्री ललितां महादेवी, नित्यं सम्पूज्य मानवः।
प्रति-नाम्ना जुहुयात् स, धन-राशिम-वाप्नुयात्।।२५।।
नवनीतं चाभिमन्त्रय, स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि!
वन्ध्यां पुत्र-प्रदं देवि! नात्र कार्या विचारणा।।२६।।
कण्ठे वा वाम-बाहौ वा, योनौ व धारणाच्छिवे !
बहु-पुत्र-वती नारी, सुभगा जायते ध्रुवम्।।२७।।
उग्रं उग्रं महदुग्रं, स्तवमिदं ललितायाः।
सु-विनीताय शान्ताय, दान्तायाति-गुणाय च।।२८।।
भक्ताय ज्येष्ठ-पुत्राय, गुरू-भक्ति-पराय च।
भक्त-भक्ताय योग्याय, भक्ति-शक्ति-पराय च।।२९।।
वेश्या-पूजन-युक्ताय, कुमारी-पूजकाय च।
दुर्गा-भक्ताय शैवाय, कामेश्वर-प्रजापिने।।३०।।
अद्वैत-भाव-युक्ताय, शक्ति-भक्ति-पराय च।
प्रदेयं शत-नामाख्यं, स्वयं ललिताज्ञया।।३१।।
खलाय पर-तन्त्राय, पर-निन्दा-पराय च।
भ्रष्टाय दुष्ट-सत्वाय, परी-वाद-पराय च।।३२।।

शिवाभक्ताय दुष्टाय, पर-दार-रताय च ।
वेश्या-स्त्री-निन्दकाय च, पंच-मकार-निन्दके।।३३।।
न स्तोत्रं दर्शयेद् देवि! मम हत्या-करो भवेत्।
तस्मान्न दापयेद् देवि! , मनसा कर्मणा गिरा।।३४।।
अन्यथा कुरूते यस्तु, स क्षीणायुर्भवेद् ध्रुवम्।
पुत्रहारी च स्त्री-हारी, राज्य-हारी भवेद् ध्रुवम।।३५।।
मन्त्र-क्षोभश्च जायते, तस्य मृत्युर्भविष्यति।
क्रम-दीक्षा-युतानां च, सिद्धिर्भवति नान्यथा।।३६।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, क्रमाद् राज्यमवाप्नुयात्।
क्रम-दीक्षा-समायुक्तः, कल्पोक्त-सिद्धि-भाग्भवेत्।।३७।।
विधेर्लिपिं तु सम्मार्ज्य, किंकरत्वं विसृज्य च।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा।।३८।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, मम समो न संशयः।
गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीय सदाऽनघे।।३९।।
स दीक्षितः सुखी साधुः, सत्य-वादी जितेन्द्रियः।
स वेद-वक्ता स्वाध्यायी, सर्वानन्द-परायणः।।४०।।
स्वस्मिन् ललितां सम्भाव्य, पूजयेज्जगदम्बिकाम्।
त्रैलोक्य-विजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ।।४१।।
गुरू-रूपं शिवं ध्यात्वा, शिव-रूपं गुरूं स्मरेत्।
सदा-शिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा।।४२।।
(श्री कौलिकार्णवे श्री भैरवी-संवादे षट्कर्म-सिद्धि-दायकं श्रीमल्ललिताया लकारादि-शत-नाम स्तोत्रं। सौजन्य से परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान।)
नोटः- जो साधक इस स्तोत्र का मात्र एक बार पाठ करते हैं, उन्हें यह स्तोत्र पूरा, अर्थात् आरम्भ से अन्त तक पढ़ना चाहिए। जो साधक इस स्तोत्र का अनुष्ठान करते हैं, उन्हें प्रथम बार आरम्भ से अन्त तक तथा इसके बाद आरम्भ के केवल १७ श्लोक ही पढ़ने चाहिए। अन्त में पुनः

एक बार आरम्भ से अन्त तक, अर्थात स्तोत्र एवं श्रुति-फल भी पढ़ना आवश्यक है।

Download Hindi Fonts from Here

http://www.4shared.com/file/7pkqu8ea/Krdv021.html

About The Author

Name :- **Shri Yogeshwaranand Ji**
Mb :- **+919917325788**
Email ;- **shaktisadhna@yahoo.com**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

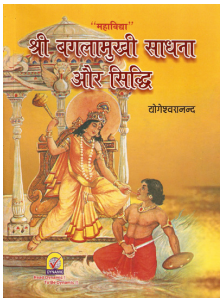

Download

http://www.scribd.com/doc/10935894/Baglamukhi-Sadhna-Aur-Siddhi

2. **Mantra Sadhna**

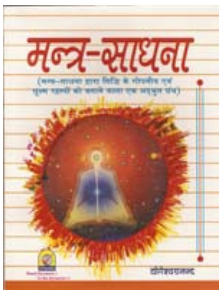

Download

http://www.scribd.com/doc/12594252/Mantra

3. **Shodashi Mahavidya**

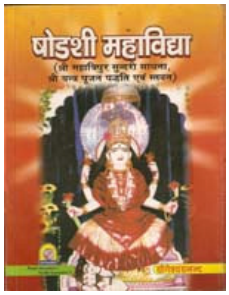

Download

http://www.scribd.com/doc/16314718/tripursundari-sadhna